

TOPIC : मिट्टी की पुकार

× प्रकृती की चिट्ठी : मिट्टी ×

हैं ये बात बहुत अहम !

हूँ नदी में किसी की रहम,

पल पल में हो रही खतम,

हैं नदी ये कोई वदम ।

आते नदी कोई मेरे साथ,

शुनते नदी कोई मेरा बात ।

मेरे नाश में हैं तेरा नाश ॥

समझ पाते, तुम यह काश ।

काट रहे तुम मेरे बच्चों को,

जिन्होंने दी हैं जान तुमको ।

जिनके दाश में हैं तेरा जान,

हैं वो ^{पेड़} प्रकृती की शान ।



करती नहीं मैं किसीकी नुकसान,
अकेली अकेली, हो रही बरबाद ।
शाथ को तुमने छीन दी ली ।
अब छीन रहे सदारा भी ?

अलग कर रहे तुम अपना बच्चा ,
कहकर उनसे हूँ मैं कच्चा ।
सदारा था वो मेरा सच्चा,
हूँ मैं दोस्त उनका अच्छा ।

हैं मानव, भूलना मत मुझे !
इतना भी ना कर अहंकार !!
तुम भी मुझसे ही बनो हो,
अंत में मुझमें ही बसोगे ।

हूँ नहीं मैं कोई और,
हूँ मैं इस धर्ती की मिट्टी,
हूँ मैं प्रकृती की चिट्ठी,
बंदे हूँ तुमने आँख में पट्टी ।



बस एक बार कर मेरा याद ।

जब खेलते थे तुम मेरा साथ,

जब भीगते थे हम एक साथ,

तब जिंदगी थी कितनी खाँस !

अभी भी वक्त है तेरे पास,

उगा लो हर जगह धाँस ।

कर लो शुद्ध इस वातावरण,

छोड़ दो धर्ती पर भरण ।

छोड़ दो उन चार दीवार,

भूल जाओ वो चार लोग;

लौट आओ मेरे पास,

खेलते हैं फिर एक साथ ।

बचा लो मुझे जल्द से जल्द !

उगा लो मुझमें पेड़ पौधे,

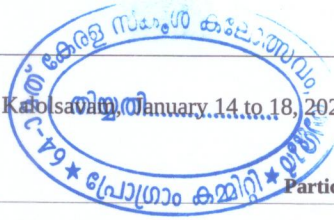
वर्णा देश ^{बहु} हो जाओगे ।

हम कभी ना मिल पाओगे,



Item Code: 958

Participant Code: 042



अलग कर रहे अपने बच्चों को
मिट्टी से बने तुम,
मिट्टी में ही मिलोगे।
जब कल मिट्टी नदी रहेंगे
तब तुम क्या करोगे ?

प्यास है मुझे पानी की
तड़प है मुझे प्यार की
तरस है मुझे अपनी माँ की
दृष्टिवाली से भरी धर्ती की।